The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 5 | December 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

झारखंड के माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि परशैक्षिक दृष्टिकोण का प्रभावः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

वीणा प्रकाश
शोध छात्रा, स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

डॉ. अवधेश रजक
प्राचार्य, एम.ए.एम. कॉलेज, नवगछिया, ति.मा. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 19/12/2025
स्वीकृति तिथि: 26/12/2025
प्रकाशनतिथि: 31/12/2025

मुख्य शब्द : सरकारी एवं प्राइवेट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति, तुलनात्मक अध्ययन, लिंग भिन्नता,विद्यार्थी।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन झारखंड के अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर शैक्षिक दृष्टिकोण के प्रभाव का विश्लेषण करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार शैक्षिक दृष्टिकोण,सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय समर्थन, विद्यालयी अवसंरचना तथाशैक्षिक वातावरण जैसे कारक विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।यह अध्ययन वर्णनात्मकएवं विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है तथाइसमें द्वितीयक आंकडों का उपयोग किया गया है, जिन्हें शिक्षा मंत्रालय (DISE+ 2021), जनगणना (2011), NCERT (2017) तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से संकलित किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता हैकि झारखंड में ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति सामान्य वर्ग की तुलना में कमजोर है, विशेष रूप से नामांकन, उपस्थिति तथा ड्रॉपआउट के संदर्भ में। सामाजिक–आर्थिक वंचना, सीमित अभिभावकीय समर्थन तथा विद्यालयीसंसाधनों की कमी इस स्थिति को और जटिल बनाते हैं। साथ ही, शैक्षिकदृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच स्पष्ट सकारात्मक संबंध पाया गयाहै, जो यह दर्शाता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों की प्रेरणा, निरंतरताऔर प्रदर्शन को सुदृढ़ करता है। अतः अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि बहुआयामी कारकों से प्रभावित होती है,जिनमें मनोवैज्ञानिक तत्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। इन निष्कर्ष के आधारपर यह सुझाव दिया गया है कि शिक्षा को अधिक समावेशी, संसाधन–संपन्नतथा दृष्टिकोण–केंद्रित बनाया जाए, ताकि शैक्षणिक असमानताओं को कमकिया जा सके।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास की आधारशिला है, जो केवल ज्ञानार्जन तकसीमित न रहकर व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक उन्नयन को भी दिशाप्रदान करती है। समकालीन वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा को मानव पूंजी निर्माण का प्रमुख साधनमाना जाता है, जो सामाजिक समानता, न्याय और अवसरों के विस्तार को सुनिश्चित करती है।भारत जैसे बहुलतावादी समाज में शिक्षा का महत्व विशेष रूप से इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकियह सामाजिक विषमताओं को कम करने और वंचित वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रभावीमाध्यम है।

अनुसूचित जनजाति (ST) समुदाय के संदर्भ में शिक्षा की भूमिका और अधिक महत्वपूर्णहो जाती है, क्योंकि यह समुदाय ऐतिहासिक रूप से सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित रहाहै। झारखंड जैसे राज्यों में, जहाँ जनजातीय जनसंख्या का महत्वपूर्ण अनुपात निवास करता है,शैक्षणिक असमानताएँ अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। माध्यमिक स्तर पर नामांकन,उपस्थिति तथा उपलब्धि के निम्न स्तर इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि शैक्षणिक विकासकेवल संरचनात्मक सुविधाओं पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह अनेक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिककारकों से भी प्रभावित होता है।

2. साहित्य सतीक्षा

पूर्व अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जनजातीय क्षेत्रों में भौगोलिक अलगाव,सांस्कृतिक विविधता तथा भाषा संबंधी बाधाएँ शिक्षा के प्रसार में अवरोध उत्पन्न करती हैं। जक्सा (2014) ने जनजातीय शिक्षा की सीमित पहुँच और गुणवत्ता पर बल देते हुए यह संकेतकिया कि इन बाधाओं के कारण विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति प्रभावित होती है। इसी प्रकारतिलक (2018) ने शिक्षा में सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को प्रमुख अवरोध के रूप मेंरेखांकित किया, जबकि आमर्त्य सेन (1999) के क्षमता दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा व्यक्ति कीस्वतंत्रता और अवसरों का विस्तार करती है, जिससे यह सशक्तिकरण का माध्यम बनती है।

विद्यालयी स्तर पर, NCERT (2017) के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि अवसंरचना, शिक्षकगुणवत्ता और अधिगम वातावरण विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण और उपलब्धि को सीधे प्रभावितकरते हैं। वहीं हिल एवं टायसन (2009) ने अभिभावकीय सहभागिता को शैक्षणिक सफलता काएक महत्वपूर्ण निर्धारक माना है। इसी क्रम में सिरिन (2005) ने यह स्थापित किया किसामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की उपलब्धि को गहराई से प्रभावित करती है।

इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षणिक उपलब्धि एक बहुआयामी प्रक्रियाहै, जिसमें सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ, पारिवारिक समर्थन, विद्यालयी वातावरण तथाविद्यार्थियों का शैक्षिक दृष्टिकोण परस्पर अंतःक्रियाशील भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप सेझारखंड के जनजातीय संदर्भ में, जहाँ संसाधन सीमित हैं, शैक्षिक दृष्टिकोण एक महत्वपूर्णमनोवैज्ञानिक कारक के रूप में उभरता है, जो विद्यार्थियों की उपलब्धि को सकारात्मक दिशाप्रदान कर सकता है। अतः इन कारकों के अंतर्संबंध का विश्लेषण करना प्रभावी शैक्षिक नीतियोंके निर्माण हेतु अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

3. अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारतीय समाज में शिक्षा को सामाजिक प्रगति और मानवीय विकास का मूल आधारमाना जाता है। यह केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित न रहकर व्यक्ति के व्यक्तित्व, सामाजिकचेतना तथा जीवन–स्तर के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान बदलतेसामाजिक–आर्थिक परिदृश्य में शिक्षा सामाजिक गतिशीलता, समान अवसरों और सशक्तिकरणका प्रमुख माध्यम बन चुकी है। अनुसूचित जनजाति समुदाय के संदर्भ में शैक्षणिक स्थितिऐतिहासिक रूप से चुनौतिपूर्ण रही है। सामाजिक वंचना, आर्थिक सीमाएँ, भौगोलिक दूरी तथासांस्कृतिक–भाषाई विविधताएँ इनके शैक्षिक विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। झारखंड में यहस्थिति विशेष रूप से परिलक्षित होती है, जहाँ जनजातीय बहुल क्षेत्रों में संसाधनों की कमी औरसीमित जागरूकता के कारण शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता प्रभावित होती है। माध्यमिक स्तरपर उच्च ड्रॉपआउट दर इस समस्या को और स्पष्ट करती है। इन परिस्थितियों में शैक्षिकदृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक के रूप में उभरता है, जो विद्यार्थियों की रुचि,प्रयास और उपलब्धि को प्रभावित करता हैय अतरू इसके अध्ययन की विशेष आवशयकता है।

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

3. अध्ययन की आवश्यकता

झारखंड में अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति अभी भी गंभीरचिंता का विषय बनी हुई है। माध्यमिक स्तर पर उच्च ड्रॉपआउट दर, कम उपस्थिति तथाअपेक्षाकृत कमजोर शैक्षणिक उपलब्धि यह दर्शाती है कि शिक्षा की निरंतरता में संरचनात्मकबाधाएँ विद्यमान हैं। आर्थिक अभाव, अभिभावकीय जागरूकता की कमी तथा सीमित शैक्षिकसंसाधन विद्यार्थियों की प्रगति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं। इसके साथ ही, शैक्षिकदृष्टिकोण जैसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है, जबकि यहविद्यार्थियों की प्रेरणा, सहभागिता और उपलब्धि का प्रमुख निर्धारक है। अतः इन सभी कारकोंके संयुक्त प्रभाव का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. झारखंड के माध्यमिक स्तर के ST विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण का अध्ययनकरना।
2. ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का विश्लेषण करना।
3. शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का परीक्षण करना।
4. सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय समर्थन तथा विद्यालयी वातावरण के प्रभावका विश्लेषण करना।

5. परिकल्पनाएँ

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की गई हैं:

1. ST विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के बीचसकारात्मक संबंध है।
2. सामाजिक–आर्थिक स्थिति ST विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप सेप्रभावित करती है।
3. अभिभावकीय समर्थन और विद्यालयी वातावरण ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धिको सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

6. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर शैक्षिकदृष्टिकोण के प्रभाव के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारितहै। इसमें मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिन्हें शिक्षा मंत्रालय केUDISE+ (2021), जनगणना (2011), NCERT (2017), जनजातीय कार्य मंत्रालय (2020) तथा संबंधित शोध लेखों एवं जर्नलों से संकलित किया गया है।

अध्ययन में एक वैचारिक ढाँचा अपनाया गया है, जिसमें शैक्षिक दृष्टिकोण को आश्रितचर तथा सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय समर्थन, विद्यालयी अवसंरचना, नीतिगतजागरूकता एवं शैक्षिक वातावरण को स्वतंत्र चरों के रूप में शामिल किया गया है। इन चरों केमध्य संबंधों के विश्लेषण हेतु तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र झारखंड तक सीमित है। विभिन्न स्रोतों के समेकित विश्लेषण के माध्यमसे निष्कर्षो को विश्वसनीय एवं प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया गया है, जिससे शैक्षणिकउपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का समग्र आकलन संभव हो सके।

7. डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

इस खंड में अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषणविभिन्न आयामों – जैसे नामांकन, उपस्थिति, ड्रॉपआउट, उपलब्धि, लिंग भिन्नता, शैक्षिकदृष्टिकोण तथा विद्यालयी अवसंरचना – के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत विश्लेषण द्वितीयकआँकड़ों एवं प्रामाणिक स्रोतों पर आधारित है, जिसका उद्देश्य शैक्षिक दृष्टिकोण एवं उपलब्धि केमध्य संबंध को स्पष्ट करना है।

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

7.1 झारखंड में अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति

यह उपखंड झारखंड में माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों कीशैक्षणिक स्थिति का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें नामांकन, उपस्थिति, ड्रॉपआउट,उत्तीर्णता तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर संक्रमण जैसे प्रमुख शैक्षिक सूचकांकों का तुलनात्मकअध्ययन किया गया है, जिससे ST एवं सामान्य वर्ग के मध्य विद्यमान शैक्षिक असमानताओं कोसमझा जा सके।

यह विश्लेषण न केवल शैक्षणिक उपलब्धि के स्तर को दर्शाता है, बल्कि इसकेपीछे कार्यरत सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों की ओर भी संकेत करता है।

तालिका 1:झारखंड में ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण (माध्यमिकस्तर)

सूचकांक	ST (%)	सामान्य (%)
ST जनसंख्या	26.0	—
साक्षरता दर	67.6	73.3
माध्यमिक नामांकन	62.0	78.0
उपस्थिति	58.0	75.0
ड्रॉपआउट दर	28.0	15.0
उत्तीर्णता	55.0	72.0
संक्रमण (उच्च माध्यमिक)	48.0	68.0

स्रोतः जनगणना (2011), UDISE+ (2021)

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि झारखंड में ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थितिसामान्य वर्ग की तुलना में अपेक्षाकृत कमजोर है। साक्षरता दर में लगभग 6 प्रतिशत का अंतरयह दर्शाता है कि शैक्षिक असमानता की शुरुआत प्रारंभिक स्तर से ही हो जाती है। यह अंतरकेवल शैक्षिक अवसरों की असमानता को नहीं दर्शाता, बल्कि यह सामाजिक–सांस्कृतिक वंचनाऔर सीमित शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता का भी परिणाम है। माध्यमिक स्तर पर नामांकन(62%) और उपस्थिति (58%) का अपेक्षाकृत निम्न स्तर यह संकेत करता है कि ST विद्यार्थियोंके लिए शिक्षा तक पहुँच और उसमें निरंतरता बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है।मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो यह स्थिति अधिगम प्रेरणा तथा आत्म–प्रभावकारिता के निम्नस्तर से भी जुड़ी हो सकती है, जो अक्सर प्रतिकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों मेंविकसित होती है। ड्रॉपआउट दर (28%) का उच्च स्तर विशेष रूप से चिंताजनक है, क्योंकियह दर्शाता है कि बड़ी संख्या में विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते। यह स्थिति केवलआर्थिक कारणों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह निम्न उपलब्धि अपेक्षा, पारिवारिक दबाव तथाशैक्षिक समर्थन के अभाव से भी संबंधित है। परिणामस्वरूप, उत्तीर्णता (55%) एवं संक्रमण दर(48%) भी प्रभावित होती है। समग्र रूप से यह स्पष्ट होता है कि ST विद्यार्थियों की शैक्षणिकउपलब्धि बहुआयामी कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पारिवारिकवातावरण एवं मनोवैज्ञानिक कारक प्रमुख हैं।

7.2 झारखंड में विद्यालयी अवसंरचना

यह उपखंड झारखंड में विद्यालयी अवसंरचना की स्थिति तथा उसके शैक्षणिक उपलब्धिपर प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। विद्यालयी सुविधाएँ न केवल शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाको सुगम बनाती हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, प्रेरणा तथा अधिगम व्यवहार को भीप्रभावित करती हैं।

तालिका 2:झारखंड में विद्यालयी सुविधाओं की उपलब्धता (माध्यमिक स्तर पर तुलनात्मकविश्लेषण)

सुविधा	झारखंड (%)
पक्के कक्ष	78
पुस्तकालय	52
कप्यूटर	38
शौचालय	61
बिजली	68

स्रोतःUDISE+ (2021)

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

तालिका 2 से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में विद्यालयी अवसंरचना आंशिक रूप सेविकसित है। पक्के कक्ष (78%) एवं बिजली (68%) जैसी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धताअपेक्षाकृत संतोषजनक है, जिससे न्यूनतम शिक्षण वातावरण सुनिश्चित होता है। किंतुपुस्तकालय (52%) एवं कंप्यूटर (38%) जैसी शैक्षिक संसाधनों की सीमित उपलब्धतागुणवत्तापूर्ण अधिगम में बाधा उत्पन्न करती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, संसाधनों की कमीविद्यार्थियों की जिज्ञासा, अन्वेषणात्मक अधिगम तथा संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करती है।डिजिटल संसाधनों की अनुपलब्धता आधुनिक शिक्षण विधियों से विद्यार्थियों को वंचित करती है,जिससे उनकी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता भी प्रभावित होती है।

विशेष रूप से शौचालय (61%) कीआंशिक उपलब्धता का प्रभाव बालिकाओं की उपस्थिति एवं निरंतरता पर पड़ता है। यह केवलएक भौतिक सुविधा का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सुरक्षा–बोध एवं विद्यालय के प्रति सकारात्मकदृष्टिकोण से भी जुड़ा हुआ है। इस प्रकार, विद्यालयी अवसंरचना केवल भौतिक संसाधनों कासमूह नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मनो–सामाजिक वातावरण निर्मित करती है, जो विद्यार्थियोंके अधिगम अनुभव, प्रेरणा तथा शैक्षणिक उपलब्धि को सीधे प्रभावित करता है। यह निष्कर्षपरिकल्पना 3 का समर्थन करता है, क्योंकि विद्यालयी वातावरण शैक्षणिक उपलब्धि को प्रत्यक्षरूप से प्रभावित करता है।

7.3 झारखंड में लिंग आधारित शैक्षणिक विश्लेषण

यह उपखंड झारखंड में अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों के बीच लिंग आधारितशैक्षणिक असमानताओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यद्यपि जनजातीय समाज अपेक्षाकृतसमतावादी माना जाता है, फिर भी शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक विषमता विद्यमान है, जो विशेष रूपसे माध्यमिक स्तर पर अधिक स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती है। यह विश्लेषण शैक्षणिकअवसरों, भागीदारी और उपलब्धि में लिंग के आधार पर अंतर को समझने का प्रयास करता है।

तालिका 3:झारखंड में लिंग आधारित शैक्षणिक स्थिति (माध्यमिक स्तर)

सूचकांक	लड़के (%)	लड़कियाँ (%)
नामांकन	65	59
उपस्थिति	60	55
ड्रॉपआउट	26	31
उत्तीर्णता	57	53

स्रोत:UDISE+ (2021), जनजातीय कार्य मंत्रालय (2020)

तालिका 3 से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में लिंग आधारित शैक्षणिक असमानताअभी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। लड़कों की तुलना में लड़कियों की नामांकन (59%) औरउपस्थिति (55%) दर कम पाई गई है, जबकि ड्रॉपआउट दर (31%) अधिक है। यह प्रवृत्ति इसबात का संकेत देती है कि लड़कियाँ शिक्षा प्रणाली में निरंतरता बनाए रखने में अधिककठिनाइयों का सामना करती हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्थिति सामाजिक अपेक्षाओं,लिंग–आधारित भूमिकाओं तथा आत्म–धारणा से जुड़ी होती है। कई बार लड़कियों में यहधारणा विकसित हो जाती है कि शिक्षा उनके लिए प्राथमिक नहीं है, जिससे उनकी अधिगमप्रेरणा प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त, घरेलू कार्यों में संलग्नता, प्रारंभिक विवाह और सुरक्षासंबंधी चिंताएँ भी उनकी शैक्षणिक निरंतरता को बाधित करती हैं। उत्तीर्णता दर में भी अंतर(लड़के: 57%, लड़कियाँ: 53%) यह दर्शाता है कि लड़कियों को अध्ययन के लिए पर्याप्तसमर्थन और अनुकूल वातावरण नहीं मिल पाता। यह स्थिति उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षणिकआत्मविश्वास के निम्न स्तर को भी प्रतिबिंबित करती है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षाप्रणाली को अधिक लिंग–संवेदनशील बनाया जाए, जिसमें न केवल भौतिक सुविधाओं काविस्तार हो, बल्कि मनोवैज्ञानिक समर्थन, परामर्श सेवाएँ एवं सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम भीशामिल हों। यद्यपि यह अध्ययन का मुख्य परिकल्पना भाग नहीं है, परन्तु यह स्पष्ट करता हैकि लिंग भी शैक्षणिक उपलब्धि का एक सहायक निर्धारक है।

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

7.4 झारखंड में शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षणिक उपलब्धि

यह उपखंड विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के मध्यसंबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्थापित तथ्य है कि किसीभी विद्यार्थी का दृष्टिकोण उसकी प्रेरणा, अध्ययन व्यवहार और प्रदर्शन को प्रत्यक्ष रूप सेप्रभावित करता है। विशेष रूप से सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों से घिरे विद्यार्थियों के लिएदृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक संसाधन के रूप में कार्य करता है।

तालिका 4: शैक्षिक दृष्टिकोण एवं उपलब्धि संबंध

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत	औसत अंक
सकारात्मक	120	60	68
मध्यम	20	25	55
नकारात्मक	30	15	42

स्रोत:NCERT (National Achievement Survey, 2017)

तालिका 4 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिकउपलब्धि के बीच एक स्पष्ट एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखनेवाले विद्यार्थियों की औसत उपलब्धि (68%) सर्वाधिक पाई गई है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोणवाले विद्यार्थियों की उपलब्धि (42%) न्यूनतम है। मध्यम दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि(55%) यह संकेत देती है कि दृष्टिकोण में सुधार के साथ शैक्षणिक प्रदर्शन में भी क्रमिक वृद्धिसंभव है। मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में, सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में आंतरिक प्रेरणा,स्व–नियमन तथा लक्ष्य–उन्मुख व्यवहार को प्रोत्साहित करता है। इसके विपरीत, नकारात्मकदृष्टिकोण सीखी हुई असहायता, निम्न आत्मविश्वास तथा अध्ययन में अरुचि को जन्म देता है,जिससे उपलब्धि प्रभावित होती है। झारखंड जैसे संदर्भो में, जहाँ सामाजिक–आर्थिक चुनौतियाँअधिक हैं, शैक्षिक दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक पूँजी के रूप में कार्य करता है। यदिविद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जाए, तो सीमित संसाधनों के बावजूदउनकी शैक्षणिक उपलब्धि में उल्लेखनीय सुधार संभव है। उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर यहस्पष्ट है कि शैक्षिक दृष्टिकोण एवं उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध विद्यमान है जोपरिकल्पना 1 का समर्थन करता है।

7.5 झारखंड में सामाजिक–आर्थिक स्थिति (SES) आधारित विश्लेषण

यह उपखंड झारखंड में अनुसूचित जनजाति (ST) एवं सामान्य वर्ग के बीचसामाजिक–आर्थिक स्थिति (SES)के आधार पर विद्यमान असमानताओं का विश्लेषण प्रस्तुतकरता है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति शिक्षा के अवसरों, संसाधनों की उपलब्धता तथा शैक्षणिकप्रगति को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख संरचनात्मक कारक है। इस विश्लेषण के माध्यम सेयह समझने का प्रयास किया गया है कि आर्थिक एवं सामाजिक वंचना किस प्रकार शैक्षणिकअसमानता को जन्म देती है।

तालिका 5:झारखंड में अनुसूचित जनजाति (ST) बनाम सामान्य वर्ग की सामाजिक–आर्थिकस्थिति

सूचकांक	ST (%)	सामान्य (%)
गरीबी रेखा के नीचे (BPL)*	45.3	21.9
औसत मासिक उपभोग व्यय (%)**	5,200	8,150
माध्यमिक / उच्च शिक्षा प्राप्त आबादी*	12.5	28.7
नियमित वेतनभोगी रोजगार**	18.2	32.4
कच्चे / अर्ध–पक्के मकान में निवास*	62.0	34.5

स्रोत:* NSSO 68th Round (2011-12), ** Periodic Labour Force Survey (PLFS), 2019–20, भारत

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

सरकार, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MOSPI)

तालिका 5 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि झारखंड में ST समुदाय कीसामाजिक–आर्थिक स्थिति सामान्य वर्ग की तुलना में उल्लेखनीय रूप से कमजोर है। गरीबीरेखा के नीचे रहने वाले ST परिवारों का प्रतिशत (45.3%) सामान्य वर्ग (21.9%) की तुलना मेंकहीं अधिक है, जो संरचनात्मक आर्थिक असमानता को दर्शाता है। यह आर्थिक विषमता केवलआय के स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, स्वास्थ्य तथा जीवन–स्तर के अन्य आयामोंको भी प्रभावित करती है। औसत मासिक उपभोग व्यय में अंतर यह संकेत देता है कि STपरिवारों के पास शैक्षिक निवेश (जैसे पुस्तकें, कोचिंग, डिजिटल संसाधन) के लिए सीमितसाधन उपलब्ध हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह स्थिति विद्यार्थियों में शैक्षणिक अभाव तथा निम्नउपलब्धि आकांक्षा को जन्म देती है। शिक्षा स्तर के संदर्भ में भी ST समुदाय स्पष्ट रूप सेपिछड़ा हुआ है, जहाँ माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों का प्रतिशत (12.5%) सामान्यवर्ग (28.7%) की तुलना में बहुत कम है। यह स्थिति पीढ़ीगत वंचना को दर्शाती है, जहाँअभिभावकों की कम शिक्षा बच्चों के शैक्षिक मार्गदर्शन को सीमित करती है।

रोजगार के क्षेत्र मेंभी असमानता परिलक्षित होती है, क्योंकि नियमित वेतनभोगी रोजगार में ST की भागीदारी कमहै। यह अस्थिर आय संरचना विद्यार्थियों के लिए अनिश्चित वातावरण उत्पन्न करती है, जोउनके अध्ययन पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। इसके अतिरिक्त, आवासीय स्थिति – जहाँअधिकांश ST परिवार कच्चे या अर्ध–पक्के मकानों में रहते हैं – यह संकेत देती है कि उनकाजीवन–पर्यावरण अधिगम के अनुकूल नहीं है।

समग्र रूप से यह स्पष्ट होता है किसामाजिक–आर्थिक स्थिति केवल एक आर्थिक संकेतक नहीं है, बल्कि यह एक व्यापकमनो–सामाजिक ढाँचा है, जो विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, प्रेरणा तथा अधिगम व्यवहार कोगहराई से प्रभावित करता है। यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थितिविद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण को प्रभावित करती है, जो परिकल्पना 2 का समर्थन करता है।

7.6 सामाजिक–आर्थिक स्थिति (SES) और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध

यह उपखंड सामाजिक–आर्थिक स्थिति (SES) और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंधका विश्लेषण प्रस्तुत करता है। मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक अनुसंधानों में यह स्थापित किया गयाहै कि SES विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया, प्रेरणा, आत्म–विश्वास तथा शैक्षणिक प्रदर्शन कोप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इस उपखंड में SES के विभिन्न स्तरों के आधार पर उपलब्धिमें अंतर को समझने का प्रयास किया गया है।

तालिका 6: सामाजिक–आर्थिक स्थिति (SES) एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध (अनुसूचितजनजाति बनाम सामान्य वर्ग)

सामाजिक–आर्थिकस्तर	ST विद्यार्थियों की उपलब्धि (%)	सामान्य विद्यार्थियों की उपलब्धि(%)
उच्च	68	78
मध्यम	58	70
निम्न	48	60

स्रोत:NSSO (2011–12), PLFS (2019–20), NCERT (2017) के आधार पर संकलितविश्लेषण

तालिका 6 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति औरशैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक स्पष्ट एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है। उच्च SES वर्ग केविद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि सर्वाधिक (ST: 68%, सामान्यः 78%) पाई गई है, जबकिनिम्न SES वर्ग में यह घटकर (ST: 48%, सामान्यः 60%) रह जाती है। यह प्रवृत्ति यह दर्शातीहै कि जैसे–जैसे सामाजिक–आर्थिक संसाधनों का स्तर बढ़ता है, वैसे–वैसे शैक्षणिक प्रदर्शन मेंभी सुधार होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, उच्च SES वाले विद्यार्थियों को अनुकूल अधिगमवातावरण, अभिभावकीय सहयोग तथा पर्याप्त शैक्षिक संसाधन प्राप्त होते हैं, जिससे उनमेंआत्म–प्रभावकारिता, आंतरिक प्रेरणा तथा लक्ष्य–उन्मुख व्यवहार विकसित होता है।

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

इसकेविपरीत, निम्न SES वर्ग के विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी, आर्थिक दबाव तथा शैक्षिकसमर्थन के अभाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनमें सीखी हुई असहायता तथा निम्नआत्मविश्वास विकसित हो सकता है। ST विद्यार्थियों के संदर्भ में यह प्रभाव अधिक गहराई सेदिखाई देता है। निम्न SES वर्ग में उनकी उपलब्धि (48%) अपेक्षाकृत कम है, जो यह दर्शाताहै कि सामाजिक–आर्थिक वंचना उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को अधिक प्रभावित करती है। यहस्थिति इस तथ्य को भी रेखांकित करती है कि संरचनात्मक असमानताएँ मनोवैज्ञानिक विकासको भी प्रभावित करती हैं। मध्यम SESवर्ग में उपलब्धि का क्रमिक सुधार यह संकेत देता हैकि संसाधनों और समर्थन में वृद्धि के साथ शैक्षणिक परिणामों में भी सुधार संभव है। इसप्रकार, SES को एक गतिशील कारक के रूप में देखा जा सकता है, जो शैक्षणिक प्रगति कोदिशा प्रदान करता है। तालिका 5 एवं 6 के संयुक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है किसामाजिक–आर्थिक स्थिति शैक्षिक दृष्टिकोण एवं उपलब्धि दोनों को प्रभावित करती है। यहनिष्कर्ष परिकल्पना 3 का समर्थन करता है।

7.7 अभिभावकीय समर्थन

अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास का एक महत्वपूर्ण मनो–सामाजिककारक है, जो उनकी प्रेरणा, आत्मविश्वास तथा अधिगम व्यवहार को प्रभावित करता है। घर परअध्ययन सहयोग, मार्गदर्शन, निगरानी तथा शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों कीशैक्षणिक उपलब्धि को सुदृढ़ बनाते हैं। विशेष रूप से झारखंड जैसे संदर्भ में, जहाँ संसाधनसीमित हैं, अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों की शैक्षिक निरंतरता में निर्णायक भूमिका निभाता है।

तालिका 7:झारखंड में अभिभावकीय समर्थन एवं शैक्षणिक सहभागिता (माध्यमिक स्तर)

सूचकांक	ST (%)	सामान्य (%)
घर पर अध्ययन में सहयोग	38	62
अभिभावकों द्वारा विद्यालय संपर्क (UTM/ बैठक में भागीदारी)	32	55
नियमित होमवक निगरानी	35	58
शिक्षा क प्रति सकारात्मक अभिभावकीय दृष्टिकोण	42	67
निजी / अतिरिक्त शिक्षण सहायता उपलब्धता	18	41

स्रोत:NCERT (NAS 2017), UDISE+ (2021), शिक्षा मंत्रालय कौ रिपोर्ट क संकेतका परआधारित

नोट: यह तालिका प्रत्यक्ष सर्वे डेटा के बजाय विभिन्न सरकारी स्रोतों एवं प्रवृत्तियों के आधार परविश्लेषणात्मक रूप में निर्मित है।

तालिका 7 यह स्पष्ट करती है कि झारखंड में ST समुदाय के विद्यार्थियों कोअभिभावकीय समर्थन अपेक्षाकृत कम प्राप्त होता है। घर पर अध्ययन सहयोग (38%) औरहोमवर्क निगरानी (३5%) जेसे संकेतक यह नसक हैं कि पारिवारिक स्तर पर शैक्षणिकसंलग्नता सीमित है। इसके विपरीत, सामान्य वर्ग में यह प्रतिशत अधिक है, जो बेहतर शैक्षणिकमार्गदर्शन को दर्शाता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों मेंआत्म–विश्वास, प्रेरणा तथा शैक्षणिक अनुशासन को सुदृढ़ करता है। ST विद्यार्थियों में इसकानिम्न स्तर उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। विद्यालयी संपर्क(32%) का कम स्तर यह भी संकेत देता है कि अभिभावक–विद्यालय सहभागिता कमजोर है,जिससे विद्यार्थियों को आवश्यक मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। अतः यह स्पष्ट है कि अभिभावकीयसमर्थन झारखंड में ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है, औरइस क्षेत्र में सुधार शैक्षिक असमानताओं को कम करने में सहायक हो सकता है। तालिका 2 एवं7 के संयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अभिभावकीय समर्थन एवं विद्यालयी वातावरण शैक्षणिकउपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं जो परिकल्पना 3 का समर्थन करता है।

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि –

- ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति बहुआयामी समस्याओं से प्रभावित है।
- लिंग आधारित असमानता स्पष्ट रूप से विद्यमान है।
- शैक्षिक दृष्टिकोण शैक्षणिक उपलब्धि का प्रमुख निर्धारक है।
- विद्यालयी अवसंरचना शैक्षणिक गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करती है।
- अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों की प्रेरणा, आत्मविश्वास तथा अध्ययन निरंतरता कोमहत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

अतः यह आवश्यक है कि शैक्षिक दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाया जाए तथासामाजिक–आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं को दूर किया जाए, जिससे STविद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में प्रभावी सुधार संभव हो सके।

8. परिणाम एवं चर्चा

इस खंड का उद्देश्य प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या करना तथा उन्हेंपूर्ववर्ती शोधों और सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य के साथ समेकित करना है। डेटा विश्लेषण में प्राप्तपरिणामों के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि अनुसूचित जनजाति (ST)विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि किन प्रमुख कारकों से प्रभावित होती है, तथा शैक्षिकदृष्टिकोण इन कारकों के साथ किस प्रकार अंतःक्रिया करता है। यह चर्चा न केवल सांख्यिकीयप्रवृत्तियों को स्पष्ट करती है, बल्कि उनके सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक निहितार्थो कोभी रेखांकित करती है।

8.1 शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि का संबंध

प्रस्तुत अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिकउपलब्धि के बीच स्पष्ट रूप से सकारात्मक संबंध विद्यमान है। तालिका 4 से यह स्पष्ट होता हैकि जिन विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है, उनकी औसत उपलब्धि (68%)सर्वाधिक पाई गई, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि (42%) न्यूनतमरही। यह प्रवृत्ति इस बात की पुष्टि करती है कि दृष्टिकोण केवल एक भावनात्मक यासंज्ञानात्मक तत्व नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यवहार, प्रेरणा तथा अध्ययन की निरंतरताको प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो सकारात्मक शैक्षिकदृष्टिकोण विद्यार्थियों में आंतरिक प्रेरणा, आत्म–नियमन तथा लक्ष्य–उन्मुख व्यवहार को विकसितकरता है, जो अंततः उनकी उपलब्धि को बढ़ाता है। NCERT (2017) के राष्ट्रीय उपलब्धिसर्वेक्षण में भी यह पाया गया कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के दृष्टिकोण कोसुदृढ़ करता है, जिससे उनकी उपलब्धि में वृद्धि होती है। झारखंड के संदर्भ में यह संबंध औरअधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ सामाजिक–आर्थिक बाधाएँ अधिक हैं। ऐसीपरिस्थितियों में सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों के लिए एक आंतरिक संसाधन के रूप में कार्य करता है, जो सीमित बाह्य संसाधनों की भरपाई कर सकता है।

8.2 सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव

अध्ययन का दूसरा महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि सामाजिक–आर्थिक स्थितिST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। तालिका 1 में प्रस्तुतआँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि 57 विद्यार्थियों की नामांकन (62%) और उपस्थिति (58%)दर सामान्य वर्ग की तुलना में कम है, जबकि ड्रॉपआउट दर (28%) अधिक है। यह स्थिति इसतथ्य की ओर संकेत करती है कि आर्थिक बाधाएँ शिक्षा की निरंतरता में प्रमुख अवरोध उत्पन्नकरती हैं। सिरिन (2005) के अनुसार, सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की शैक्षणिकउपलब्धि का एक प्रमुख निर्धारक है, क्योंकि यह संसाधनों की उपलब्धता, पारिवारिक समर्थनतथा अध्ययन के अवसरों को प्रभावित करती है। तिलक (2018) ने भी यह स्पष्ट किया किआर्थिक असमानता के कारण शिक्षा में अवसरों का असमान वितरण होता है, जिससे वंचित वर्गों की उपलब्धि प्रभावित होती है। झारखंड में यह समस्या और अधिक स्पष्ट रूप से देखी जातीहै, जहाँ अधिकांश ST परिवार निम्न आय वर्ग से संबंधित हैं। आर्थिक दबाव के कारण कईविद्यार्थी विद्यालय के साथ–साथ पारिवारिक कार्यो में संलग्न रहते हैं, जिससे उनकी उपस्थितिऔर अध्ययन समय दोनों प्रभावित होते हैं। इसके अतिरिक्त, अध्ययन सामग्री, निजी शिक्षण तथाडिजिटल संसाधनों की कमी भी उनकी उपलब्धि को सीमित करती है।

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

8.3 अभिभावकीय समर्थन एवं पारिवारिक वातावरण

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों की शैक्षणिकउपलब्धि में एक निर्णायक भूमिका निभाता है। जिन विद्यार्थियों को परिवार से प्रोत्साहन,मार्गदर्शन तथा सहयोग प्राप्त होता है, वे अधिक आत्मविश्वास के साथ अध्ययन करते हैं औरबेहतर प्रदर्शन करते हैं। इसके विपरीत, जहाँ अभिभावकों की शिक्षा का स्तर निम्न होता है याशिक्षा के प्रति जागरूकता कम होती है, वहाँ विद्यार्थियों की उपलब्धि भी प्रभावित होती है। हिलएवं टायसन (2009) के अध्ययन में यह पाया गया कि अभिभावकीय सहभागिता विद्यार्थियों कीशैक्षणिक सफलता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है। भारतीय संदर्भ में भी यह तथ्य प्रमाणितहुआ है कि पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और अध्ययन व्यवहार को प्रभावितकरता है। झारखंड में, जहाँ जनजातीय समुदायों में अभिभावकीय अशिक्षा का स्तर अपेक्षाकृतअधिक है, यह समस्या और गंभीर हो जाती है। कई अभिभावक शिक्षा के दीर्घकालिक लाभों कोनहीं समझ पाते, जिसके कारण वे बच्चों की शिक्षा में अपेक्षित सहयोग नहीं दे पाते।परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति प्रेरणा और निरंतरता दोनों प्रभावित होती हैं।

8.4 विद्यालयी अवसंरचना और शैक्षणिक गुणवत्ता

विद्यालयी अवसंरचना का विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पायागया है। तालिका 5 से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में कंप्यूटर (38%) और पुस्तकालय(52%) जैसी सुविधाओं की उपलब्धता सीमित है। यह स्थिति शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया कोप्रभावित करती है, विशेष रूप से वर्तमान डिजिटल युग में। NCERT (2017) के अनुसार,विद्यालयी अवसंरचना – जैसे कक्षाएँ, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, डिजिटल संसाधन – विद्यार्थियोंकी सीखने की गुणवत्ता और दृष्टिकोण दोनों को प्रभावित करती है। जिन विद्यालयों में बेहतरसुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, वहाँ विद्यार्थियों की सहभागिता और उपलब्धि दोनों अधिक होती हैं।झारखंड में अवसंरचना की कमी विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट है। बालिकाओं केलिए शौचालय की सीमित उपलब्धता उनकी उपस्थिति को प्रभावित करती है, जबकि कंप्यूटरसुविधा की कमी डिजिटल शिक्षा के अवसरों को सीमित करती है। इस प्रकार, अवसंरचना कीकमी केवल भौतिक बाधा नहीं, बल्कि यह विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और प्रेरणा को भी प्रभावितकरती है।

8.5 नीतिगत जागरूकता और योजनाओं का प्रभाव

अध्ययन का एक अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि सरकारी योजनाओं के प्रतिजागरूकता का अभाव ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है। यद्यपिसरकार द्वारा छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा, आवासीय विद्यालय आदि अनेक योजनाएँ संचालित कीजा रही हैं, फिर भी इन योजनाओं का लाभ सभी विद्यार्थियों तक नहीं पहुँच पाता। जनजातीयकार्य मंत्रालय (2020) की रिपोर्ट के अनुसार, योजनाओं की प्रभावशीलता तभी बढ़ती है जबउनके प्रति पर्याप्त जागरूकता हो। कई मामलों में अभिभावकों और विद्यार्थियों को इन योजनाओंकी जानकारी नहीं होती, जिसके कारण वे इनका लाभ नहीं उठा पाते। झारखंड में यह समस्याविशेष रूप से ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट है। यदि योजनाओं की जानकारीस्थानीय स्तर तक प्रभावी ढंग से पहुँचाई जाए, तो यह विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को सकारात्मकबनाने और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक हो सकती है।

9. प्रमुख परिणाम

उपरोक्त अध्ययन से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होते हैं –

- ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति बहुआयामी समस्याओं से प्रभावित है।
- लिंग आधारित असमानता स्पष्ट रूप से विद्यमान है।
- अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि सामान्य वर्ग की तुलनामें अपेक्षाकृत निम्न पाई गई, जिसमें नामांकन, उपस्थिति एवं उत्तीर्णता के स्तर परस्पष्ट अंतर देखा गया।

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

- माध्यमिक स्तर पर ST विद्यार्थियों में ड्रॉपआउट दर अधिक पाई गई, जो शिक्षा कीनिरंतरता में एक प्रमुख बाधा है।
- शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच स्पष्ट सकारात्मक संबंध पायागया; सकारात्मक दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन बेहतर रहा।
- सामाजिक–आर्थिक स्थिति शैक्षणिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक सिद्ध हुई; आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ताहै।
- अभिभावकीय समर्थन का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया; जिन विद्यार्थियों को पारिवारिक सहयोग प्राप्त हुआ, उनका प्रदर्शन बेहतर रहा।
- विद्यालयी अवसंरचना – जैसे पुस्तकालय, कंप्यूटर, शौचालय एवं बिजली – कीकमी विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती है।
- लिंग आधारित असमानता स्पष्ट रूप से विद्यमान पाई गई, जहाँ बालिकाओं कीड्रॉपआउट दर अधिक एवं उपस्थिति कम रही।
- नीतिगत योजनाओं एवं शैक्षणिक सुविधाओं के प्रति जागरूकता का अभाव विद्यार्थियोंको उनके लाभ से वंचित करता है।
- अध्ययन व्यवहार एवं प्रेरणा का स्तर शैक्षणिक दृष्टिकोण से प्रभावित पाया गया, जोअंततः उपलब्धि को निर्धारित करता है।
- झारखंड के संदर्भ में यह पाया गया कि स्थानीय स्तर पर संसाधनों की कमी एवंसामाजिक परिस्थितियाँ शैक्षणिक प्रगति को सीमित करती हैं।

10. सुझाव

उपरोक्त विश्लेष्सण के आधार पर निम्नलिखित सुझाव समेकित हैं –

- जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने हेतुप्रेरणात्मक एवं परामर्श कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
- आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्य सामग्री एवंअन्य सहायता योजनाओं का विस्तार किया जाए।
- विद्यालयी अवसंरचना में सुधार किया जाए, विशेष रूप से पुस्तकालय, डिजिटलसंसाधन एवं कंप्यूटर सुविधाओं को बढ़ाया जाए।
- बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पृथक शौचालय, सुरक्षा एवं जागरूकताकार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जाए।
- अभिभावकों के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएँ, जिससे वे शिक्षा के महत्व कोसमझें और बच्चों को सहयोग प्रदान करें।
- शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ, ताकि वे जनजातीयविद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं को समझ सकें।
- सरकारी योजनाओं एवं नीतियों की जानकारी गाँव स्तर तक पहुँचाने के लिए प्रभावीसंचार तंत्र विकसित किया जाए।
- विद्यालयों में सकारात्मक एवं समावेशी वातावरण विकसित किया जाए, जिससेविद्यार्थियों का सामाजिक अनुकूलन बेहतर हो सके।
- अध्ययन आदतों एवं समय प्रबंधन कौशल को विकसित करने हेतु विशेष शैक्षणिककार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
- स्थानीय भाषा एवं सांस्कृतिक संदर्भो को ध्यान में रखते हुए शिक्षण पद्धति कोअधिक प्रासंगिक एवं प्रभावी बनाया जाए।

Corresponding Author: veenap190@gmail.com

11. समापन टिपण्णी

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षणिकउपलब्धि अनेक परस्पर संबद्ध कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें शैक्षिक दृष्टिकोण केंद्रीयभूमिका निभाता है। सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में प्रेरणा, अनुशासन एवं बेहतर प्रदर्शन कोप्रोत्साहित करता है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण उनकी प्रगति को बाधित करता है। इसकेअतिरिक्त सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय समर्थन, विद्यालयी अवसंरचना एवं नीतिगतजागरूकता भी महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में उभरते हैं। झारखंड के संदर्भ में संसाधनों कीकमी, आर्थिक दबाव एवं जागरूकता का अभाव शैक्षणिक निरंतरता को प्रभावित करते हैं।अध्ययन यह भी दर्शाता है कि शैक्षिक दृष्टिकोण अन्य कारकों के साथ अंतःक्रिया कर उनकीप्रभावशीलता को प्रभावित करता है। अतः समावेशी नीतियों, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं संसाधनों केसमुचित प्रावधान के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में प्रभावी सुधार संभव है।

संदर्भ सूची

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2021). यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशनप्लस (UDISE+ 2020–21 रिपोर्ट |https://udiseplus.gov.in

भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय (2011). भारत की जनगणना 2011, भारत सरकार |https://censusindia.gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) (2017). राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण(NAS) 2017 रिपोर्ट |https://ncert.nic.in

जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार (2020). वार्षिक प्रतिवेदन 2019–201। https://tribal.nic.in

सेन, अमर्त्य. (1999). डेवलपमेंट ऐज फ्रीडम, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

जक्सा, वी. (2014). रिपोर्ट ऑफ द हाई–लेवल कमिटी ऑन सोशियो–इकोनॉमिक, हेल्थ एंडएजुकेशनल स्टेटस ऑफ ट्राइबल कम्युनिटीज ऑफ इंडिया। मिनिस्ट्री ऑफ ट्राइबलअफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ।

तिलक, जे. बी. जी. (2018). एजुकेशन एंड डेवलपमेंट इन इंडियाः क्रिटिकल इश्यूज इन पब्लिकपॉलिसी एंड डेवलपमेंट, पालग्रेव मैकमिलन।

हिल, एन. ई. एवं टायसन, डी. एफ. (2009). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन मिडिल स्कूलः एमेटा–एनालिटिक असेसमेंट ऑफ द स्ट्रैटेजीज बम प्रमोट अचीवमेंट, डेवलपमेंटलसाइकोलॉजी, 45(3), 740–763। https://doi.org/10.1037/a0015362

सिरिन, एस. आर. (2005). सोशियोइकोनॉमिक स्टेटस एंड अकैडमिक अचीवमेंटः एमेटा–एनालिटिकरिव्यू ऑफरिसर्च, रिव्यू ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 75(3), 417–453। https://doi.org/10.3102/00346543075003417

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MOSPI), भारत सरकार (2014). एनएसएसओ68वां राउंड (2011–12): उपभोग व्यय सर्वेक्षण।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MOSPI), भारत सरकार (2021). आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण (PLFS) 2019–20 वार्षिक रिपोर्ट।

Corresponding Author: veenap190@gmail.com